



निव्यपेवागुमाप्रयः पर्याप्तैकैकसकैसांनिमेयागुनवनमः॥निर्मात्म
नीदिनममपुलगाकायादिवर्जवैकापाकासाकलनाकलामन
सवासूआडसूयापमाविद्यावच्चकदंवेकदंरुमियात्रकजयाः
हंदनीसानंदाललिगार्धगहृननावावाहिकापाठवो॥ ॥
आदोकल्यानमलकल्यानयथावसानकल्यानसोपसूर्यरु

४२

नैकवलपनिपुष्टुपनिगुष्टपयावदार्गवसूत्रयसंपकाश
यगिमा॥आयुर्वेद्विज्ञेसावद्विविद्यासूत्रावेवजुनधन
संगानननहसफवद्वि॥ ॥कनगतावना॥उंवरुामनाद
क००००॥उंनम२सहागद्विहा॥नैदाकिनीजलनूपीविहाव्या॥उं॥
मटिकिविकारनपनिगर्तनाताननमस्यकनगंआःकानरुगुर्द्वधः

मादियाक नती विरावा ॥ मद नृत्तस्व वीज विष्णुपनि ॥ म नृत्तस्व
वगावर्ज विर्विषयस्व दृष्टी ज मयूँ क ॥ न हान सत्त्व मानी य पू न मा
दक्षास मय सत्त्व ॥ य वे ॥ म हाना गण ५ वी ह्य वा विचिहसी ॥
निरुती विर्विं तथ नृ ॥ विष्णु वस मय द व गा हान द व त था न की
ह ती विष्णु य नृ ॥ ॥ आ क र्ज ॥ ॐ आ १ ख ॥ ॐ आ १ ह ॥ सर्व विष्णु ॥

दीप द ह न क न कान य २ दृष्ट ॥ ॐ आ १ विष्णु क क स र्वा पाप वि
ष्णु माला रु मि न क नृ दृष्ट ॥ ॐ का प का ॥ ॐ आ १ विष्णु क क स
र्व दक्षा ॥ म प क ॥ म नि प ॥ म कि क नृ दृष्ट ॥ ॐ आ १ वि
ष्णु क क स र्वा पू ॥ म हान स र्वा नान ॥ म क य दृष्ट ॥ ॐ आ १ वि
१ विष्णु क क स र्वा वलान प न य दृष्ट ॥ क य म ला ॥ ॐ आ १ विष्णु क क

सर्वानि कान्तपुष्पार्किकुन्दाहा ॥ सविम्बुता ॥ उं सर्वपापदहनवः
जायकजसत्वेत्यसर्वपापदहनत्वाहा ॥ समाधाव ॥ उं अविष्मकक
सर्वेस्कान्तपुष्पार्किकुन्दाहा ॥ उं रुनरुनसंरुनं ॥ उं डिमबलिवि ॥ सधनिः
नूनचलेहं हं रुदत्वाहा ॥ पापादिपुष्पितो ॥ पत्न्यापदानपुज्य ॥ ला
भासभावादतपुति ॥ ॥ अथगीम ॥ सविहंरुनभागतस्यव

सर्वकुरुदकल्पवैवस्वनमन्त्रकनहिमवकपर्वनपालवैरुनमन्त्र
कलियुक्तयाम्बुदीपं वासुखिकुं गं आयावरुपं ॥ धरुमो नपाल
दंता वागमयी पश्चिमं कं भावली पूर्वकूलसंखन ॥ वायुव्यको ॥ स
पूरुगिनि वनं सुइज्याहासिताला ॥ नकदं वानयस्वंगी ३ खयं
वैद्यमन्त्रिकानं ॥ अथादिवाक्यादि ॥ ॥

थनवलिसुक्कायसायक ॥

॥ उन्कवकमनवायवककगुलगदया

मयाग्वेपलकवर्गन्यागमविशेषकधाराडनरुनगरुमांमार्गमादिवि
षट्ककनोदमहानोददवदरुसमाधिग ॥ कककलानीविरुत्तीनैदाती
मिविनायकध्वामधानविरुत्तीउमादवीकुसैरुवा ॥ उयात्रचिज्या
नेवजुजिगाजपमकिता ॥ रुदकालीमहाकालीरुनकालीउयागिनी
॥ ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कवोडी द्वीपिनीवाणिः

संन्यासमवस्थितयगिनी ॥ ध्याननूपामहानूपादंष्ट्रनूपाकपानिनी ॥
कपालमालमार्गिन्यास्वद्योगमयमदक्षिका ॥ खड्गदस्तापनगुरुकावः
ऊरुकाधनरुध ॥ पंचजकिनीमहाकत्वसर्वकर्म्मार्थसाधक ॥ आगः
मिलुलमहानागकः ॥ गवनीपरुक्कथा ॥ कथागकमहाकायनिर्गजन्याः
गगुष्टिका ॥ ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सर्वसिद्धिनी ॥ उं ककक

इति श्रवणं त्रैलोक्यं सारवत्सलं च यद्यपि यः श्रुत्वा मानसम् ॥ १ ॥
मीमांसिकादिभिः कृतं किं कुरु कुरु धर्मात्मा ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ सप्तमं भाग्यं कायं ह्येकं ॥ ४ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ सप्तमं भाग्यं कायं ह्येकं ॥ ६ ॥
सप्तमं भाग्यं कायं ह्येकं ॥ ७ ॥ सप्तमं भाग्यं कायं ह्येकं ॥ ८ ॥
सप्तमं भाग्यं कायं ह्येकं ॥ ९ ॥ सप्तमं भाग्यं कायं ह्येकं ॥ १० ॥

कलाभिपस्यति स वजनकस्य नदीगले हवतु न पनमाहि खके वृत्ति
 डिर्वैर्दं ॥ पतिर्वैव स माधमा अरुणु द्वा घृता विलाज्या घानाहिला
 यावदुक्तमसमकर्वं ॥ ३८ ॥ स वनथागगज्यारिषकसमप्रयुक्तं ॥ खानयाक
 ॥ अयमसकलैर्जनी सरुलीजीविनी मञ्जुयसमयसर्वद्वानाहविज
 हननसयं ॥ अणुमदिवसायक हाकयमोरुमसंतिपाकरुवक

म

धामिद पिन

पयव्वेव्वीनिमग्नं ॥ ३९ ॥ वज्ररुमद्विज्जादक वज्रणमध वज्रसूव धुजल
 धानसलाहा ॥ सिधलैतिक ॥ ४० ॥ दनपनमग्नं धंसरुजिसीर्गसरुणहिन
 नियाग्यामि वज्रकिलकरुण ॥ ४१ ॥ सलाहा ॥ ऊर्जकाग्न ॥ युक्तालेकालय
 जामघसमदरुनलज्झापविक वज्रवाधीगदरु कव्ववाससंसाहा
 खानसय ॥ ललितवक्त्र नगीवृक्षस्वलिदवाप्तसंका ॥ ४२ ॥ स्वस्ति सवो विह

कालि मन्त्र कालीदिहं उ व ॥ वृद्ध पूजा नूरावनद वना नाम न न च ॥ यो यो धर्म
 मरिष्य न ॥ ~~सुव (था घ स म धा न)~~ स्वस्ति वादि प द शा न
 स्वस्ति वा सु व रु स्य द ॥ स्वस्ति वा व रु ना सा ता स्वस्ति प त्या ग न पू च ॥ स्वस्ति
 ना शा स्वस्ति दि वा स्वस्ति म (ध्वादि न स्ति न) ॥ सर्व रु स्वस्ति वा शा रु मा चै वी
 प्रा य सा ग म न ॥ स व स त्वा ॥ स व पा ॥ स व रु ना च क व ला ॥ स वः

वे स वि न सं उ स व सं उ नि मा त्म या ॥ स व रु ना नि प ॥ सु मा क शि यो य मा
 ग म रु ॥ या नी रु रु ना नि स मा ग ना नि स्ति ना नि रु मा व थ वा क नि य ॥ क
 व रु मं जी व न मं पि जा स दि वा च ना शा व च नै उ ध र्मा ॥ ॥ न व रु स
 अ न व य स व र्म यू कं वा य हा य स मं चि त ॥ व रु र्ग ध न सा प नं प नि रु द
 उं य था स र्व ॥ उं व रु न व य स्वा हा ॥ धा ला क य ॥ उं न मा रु ग व न हा दि

यामृष्टधियापुनः॥ कर्मवीरत्वयानाथ यदि मां प्राप्तिदहिनी ॥ नरु
बुद्धवगाः सचेक नूधं पुनिमा विनी ॥ कानूदानपनं ॥ किंस्वकिं वयं
किं वसचेक ॥ यनूकनकायजं पापयनूकनवाकजं पापयनूकनी
चिरुजपापं नत्स वै ॥ दगया म्यहं ॥ नमास्तु न वृद्ध अर्तनं ॥ मय
लानमस्तु सत्यपुकाग कामनस्तु पुनि कायजाय मोचस्तु वचका
(मज्जहि न क्रियाहि न रावहि न क्रमस्तु २

यासिरुलाह वंठुपसिद्ध पुन भगव नीयन भगवनी ॥ ॥ ५० ॥
पंचामर सुलाघानं प्रवक्ष्यामि सुहाजिनी ॥ गीतवाचन नानि त्वं वं
त्वीसून वीदिनी ॥ अक्षरं गुरुतादवी अक्षरं निवासिनी ॥ अक्षरं न व
स्युर्क अक्षमयिकां न माम्यहं ॥ नमस्का नु न वी नु का नरु यना नै
नं नु न सचा नु न का न स्वाहा का न न माम्यहं ॥ अका ॥ निम्मे नो रुता नै ॥

...के ... वे ...
 ... न ...
 ... न ...
 ... न ...
 ... न ...
 ... न ...
 ... न ...
 ... न ...

१२२
 ...

...
 ...
 ...
 ...
 ...